NAMAZ MEIN LUQMA DENE KE MASAIL (HINDI)

नमाज़ में लुक़मा देने के मसाइल

- लुक़मा देने के शर-ई अहकाम 18
- लुक़मा देते हुए क्या निय्यत करे ? 19
- फ़ौरन ही लुक़मा देने का शर-ई हुक्म 24
- क्या मुक़्तदी कुरआने पाक देख कर लुक़मा दे सकता है ? 26
- लुक़मा किन अल्फ़ाज़ के साथ देना चाहिये ? 31
- नमाज़े ईद की तक्बीरात भूलने पर लुक़मा देने के मसाइल 37

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल

येह रिसाला (**नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल**)

मुफ़्ती अ़ली असग़र अ़त्तारी अल म-दनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है, जिसे मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

नमाज़ में लुक़्मा देने से मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मसाइल पर मुश्तमिल रिसाला

नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल

मुरत्तिब
मौलाना अ़ली असग़र अल अ़त्तारिय्युल म-दनी

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

जुम्ला हुक़ूक़ बह़क़्क़े नाशिर मह़फ़ूज़ हैं

नाम किताब : नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल
मुअल्लिफ़ : मौलाना अ़ली असग़र अल अ़त्तारिय्युल म-दनी
सिने त़बाअ़त : स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1435 सि.हि.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C / 0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290
अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414
ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ　　　　وعلیٰ الک واصحابک یاحبیب اللہ

तारीख़ : **22** र-मज़ानुल मुबारक **1426** हि.　　　　ह़वाला : **116**

तस्दीक़ नामा

الحمد للہ رب العٰلمین والصلوۃ والسلام علیٰ سید المرسلین
وعلیٰ الہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''लुक़्मा के मसाइल''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे

तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

27-10-2005

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़् शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब
(4) शो'बए इस्लाही कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

www.dawateislami.net

''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

1	मुक़द्दमा	8
2	लुक़्मा देना कब फ़र्ज़े किफ़ाया है ?	15
3	लुक़्मा देना कब वाजिबे किफ़ाया है ?	17
4	तरावीह़ में क़िराअत से कुछ ह़िस्सा रह जाने पर लुक़्मा देने का शर-ई ह़ुक्म	18
5	तरावीह़ में इमाम ने कुछ छोड़ दिया तो क्या उसे सलाम के बा'द बताना चाहिये ?	18
6	क्या सामेअ़ के इ़लावा कोई दूसरा मुक़्तदी लुक़्मा दे सकता है ?	19
7	लुक़्मा देते हुए क्या निय्यत करे ?	19
8	ह़ाफ़िज़ को परेशान करने की निय्यत से ख़्वाह म ख़्वाह लुक़्मा देना कैसा है ?	20
9	लुक़्मा देते वक़्त अगर अपना ह़िफ़्ज़ जतलाना मक़्सूद हो तो ?	20
10	अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देने का शर-ई ह़ुक्म	21
11	इमाम ने अपने मुक़्तदी के इ़लावा किसी और का लुक़्मा लिया तो ?	22
12	तरावीह़ में सह्वन ग़लत़ बताना मुफ़्सिदे नमाज़ है या नहीं ?	24
13	फ़ौरन ही लुक़्मा देने का शर-ई ह़ुक्म	24
14	इमाम का मुक़्तदियों को लुक़्मा देने पर मजबूर करना कैसा ?	25
15	क्या मुक़्तदी क़ुरआने पाक देख कर लुक़्मा दे सकता है ?	26
16	लुक़्मा देना और लेना किस अ़मल से मुशाबेह है ?	27
17	चार रक्अ़त नमाज़ में क़ा'दए ऊला किये बिग़ैर तीसरी रक्अ़त के लिये खड़े होने वाले इमाम को लुक़्मा देने के मसाइल	29
18	क़ा'दए ऊला में मा'मूल से ज़ियादा ताख़ीर पर लुक़्मा देने का शर-ई ह़ुक्म	29
19	लुक़्मा किन अल्फ़ाज़ के साथ देना चाहिये ?	31

www.dawateislami.net

20	क्या येह दुरुस्त है कि तीन आयत के बा'द लुक़्मा नहीं देना चाहिये ?	33
21	वित्र में इमाम के दुआ़ए क़ुनूत भूल जाने पर लुक़्मा देना कैसा ?	33
22	दौराने क़िराअत भूलने पर दूसरे मक़ाम से तिलावत शुरूअ़ कर देने वाले इमाम को लुक़्मा देना कैसा ?	35
23	दो रक्अ़त हो जाने के बा वुजूद एक रक्अ़त का गुमान कर के लुक़्मा देने वाले की नमाज़ का शर-ई हुक्म	36
24	नमाज़े ईद की तक्बीरात भूलने पर लुक़्मा देने के मसाइल	37
25	लुक़्मा देने में ''बैठ जाओ'' के अल्फ़ाज़ बोलने वाले की नमाज़ का शर-ई हुक्म	38
26	ब क़-दरे किफ़ायत तिलावत करने के बा'द भूल हुई तो लुक़्मा देने का शर-ई हुक्म	39
27	इमाम के लुक़्मा न लेने की सूरत में लुक़्मा देने वाले की नमाज़ का शर-ई हुक्म	40

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العٰلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين۔

امابعد दीने मतीन दीने इस्लाम में इ़बादत का एक मरबूत़ निज़ाम मुक़र्रर है, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात अल ग़रज़ इ़बादत की तमाम अक़्साम में ह़ुस्ने तरतीब और ज़ीनते ज़वाबित़ का निखार वाज़ेह़ त़ौर पर नज़र आता है। हर इ़बादत का ख़ास मे'यार मुक़र्रर है, इ़बादत करने वाला ज़ाहिरी और बात़िनी काविशों से उस मे'यार तक पहुंचने की कोशिश करता है और उस मे'यार की रिआ़यत न हो तो वोह इ़बादत पायए तक्मील तक नहीं पहुंचती।

नमाज़ ही को देख लीजिये इस ज़िम्मे को अदा करने के लिये छ[6] शराइत़ और सात फ़राइज़ मुक़र्रर हैं कोई एक भी छूट जाए तो सिरे से फ़र्ज़ अदा ही न होगा। 30 से ज़ियादा वाजिबात हैं जिन में से किसी एक के छूट जाने से नमाज़ पायए तक्मील को नहीं पहुंचती बल्कि अधूरी रहती है।

नमाज़ चूंकि मोमिन की मे'राज है इस के ज़रीए बन्दा रब عَزَّوَجَلَّ की क़ुर्बत ह़ासिल करता है। इस लिये इसे पूरे एहतिमाम के साथ अदा किया जाता है ताकि बन्दा अपने रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर हो तो पाक व साफ़ ह़ालत में हो, मुंह उस का ख़ानए ख़ुदा की जानिब हो, निय्यत हर क़िस्म के रिया से पाक हो, लिल्लाहिय्यत पेशे नज़र हो, अपने दोनों हाथ उठा कर दुन्या व मा फ़ीहा से बे नियाज़ी का इज़्हार करता हुवा क़ियाम में हाथ बांध कर आ़जिज़ी के साथ खड़ा हो कर ایاك نعبد و ایاك نستعین कहते हुए उस मक़ाम तक जा पहुंचे कि गोया ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को देख रहा है येह न हो तो कम अज़ कम येही समझे कि ख़ुदा

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ इसे देख रहा है। उस की बारगाह में रुकूअ़ बजा लाए फिर अपनी जबीं को ख़ाक पर रख कर ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर के सामने ग़ायते तज़्लील को अपनाए। अल ह़ासिल अगर तमाम के तमाम ज़ाहिरी व बातिनी लवाज़िमात को पूरा किया जाए तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में क़ुर्ब ज़रूर ह़ासिल होता है। लेकिन शैत़ान येह कब चाहेगा कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब बन जाए पहले तो वोह येह कोशिश करेगा कि बन्दा नमाज़ ही न पढ़ने पाए, अगर इन्सान शैत़ान के बहकावे में न आया तो अब शैत़ान की येह कोशिश होती है कि नमाज़ में होने के बा वुजूद उस को ज़ेहनी त़ौर पर नमाज़ से हटा दिया जाए लिहाज़ा शैत़ान उस की तवज्जोह नमाज़ से हटाने की पूरी कोशिश करता है ह़दीसे मुबा-रका, जिसे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रिवायत किया, में है कि

"أن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال اذا نودى بالآذان أدبر الشيطان له ضراط حتى لا يسمع الآذان فاذا قضى الآذان أقبل فاذا ثوب أدبر فاذا قضى التثويب أقبل يخطر بين المرء و نفسه ،يقول اذكر كذا ،اذكر كذا لما لم يكن يذكر حتى يظل الرجل ان يدرى كم صلى-- الخ"

तरजमा : जब अज़ान होती है तो शैत़ान पीठ फैर कर गूज़ मारता हुवा भागता है ताकि अज़ान न सुन सके अज़ान के बा'द फिर आ जाता है और जब तक्बीर होती है तो फिर भाग जाता है तक्बीर के बा'द आ कर नमाज़ी को वस्वसा डालना शुरूअ़ कर देता है और उस की भूली हुई बातों के बारे में कहता है फ़ुलां बात याद कर, फ़ुलां बात याद कर ह़त्ता कि नमाज़ी को याद नहीं रहता कि उस ने कितनी रक्अ़त पढ़ी हैं।... الخ

(صحيح مسلم باب السهو فى الصلاة و السجود له ص٢٠٥،رقم الحديث٣٨٩ مطبوعه دارابن حزم بيروت)

www.dawateislami.net

इसी बिना पर बसा अवक़ात नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ में भूल का शिकार हो जाता है अगर्चे कि वस्वासे शैत़ान के इ़लावा भूलने की और भी वुजूहात हैं म-सलन मुक़्तदी की त़हारत में कमी रह जाना भी इमाम की याद दाश्त पर असर अन्दाज़ होता है जैसा कि ह़दीसे पाक में है ''एक रोज़ नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ में सूरए रूम पढ़ रहे थे और मु-तशाबह लगा। बा'दे नमाज़ इर्शाद फ़रमाया क्या ह़ाल है उन लोगों का ? जो हमारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं और अच्छी त़रह़ त़हारत नहीं करते उन्हीं की वजह से इमाम को क़िराअत में शुबा पड़ता है।''

(نسائی شریف باب القراء ة فی الصبح بالروم ص۱۶۵ مطبوعه بیروت)

इसी त़रह़ भूल जाने की त़िब्बी वुजूहात भी हो सकती हैं लेकिन येह बात त़ै है कि इन्सान ख़त़ा का पुतला है भूलचूक इस के ख़मीर में शामिल है। लिहाज़ा जहां शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इ़बादत करना सिखाया है उस को पायए तक्मील तक पहुंचाने के लिये शराइत़ व ज़वाबित़ बताए हैं। यूंही इन्सान की भूल और इस की ख़त़ा को देखते हुए शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इ़बादत में कोई कमी रह जाने या दौराने इ़बादत किसी ख़लल के आ जाने पर उस की तस्ह़ीह़ का त़रीक़ा भी बताया है म-सलन ह़ज में जब कोई ह़रम या एह़राम की हुरमत की पासदारी न रख सके तो उस पर जिनायत लाज़िम होती है, यूं कभी दम कभी स-दक़ा दे कर या रोज़ा रख कर कमी पूरी की जाती है, नमाज़ में भूले से वाजिब रह जाने पर सज्दए सह्व कर के तलाफ़ी की जाती है। यूंही इमाम जब दौराने क़िराअत भूल जाए या इन्तिक़ाले रुक्न में ख़त़ा हो म-सलन तीसरी रक्अ़त में क़ा'दा में बैठ गया ह़ालां कि इस को नहीं बैठना था तो ऐसी सूरत में नमाज़ी को लुक़्मा देने का ह़क़ दिया गया है ताकि वोह इमाम को तम्बीह कर सकें।

ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'लीमात हमें इस

www.dawateislami.net

सिल्सिले में भी रहनुमाई मुहय्या करती हैं । बा'ज़ अहादीस में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से किसी आयत के रह जाने का ज़िक्र होगा उसे कोई हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कमी न समझे बल्कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान तो येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم नमाज़ में क़िब्ला रू होते हुए पीछे खड़े मुक़्तदी के ज़ाहिरी और क़ल्बी हालात पर वाक़िफ़ हो जाते थे जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की हदीसे पाक में है जिस को हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं

''أن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال هل ترون قبلتى ههنا فوالله ما يخفى علىّ خشوعكم و لا ركوعكم انى لأراكم من وراء ظهرى''

तरजमा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया तुम क्या गुमान करते हो कि मेरा क़िब्ला इस त़रफ़ है (या'नी मेरा रुख़ क़िब्ले की जानिब है तो क्या हुवा) अल्लाह की क़सम न तो तुम्हारे रुकूअ़ मुझ पर मख़्फ़ी हैं और न ही तुम्हारे ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़, बेशक मैं अपनी पीठ की जानिब से भी देखता हूं । (بخارى شريف ص ۵۹ قديمى كتب خانه)

ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि नमाज़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कुछ रह जाने का मुआ़-मला ता'लीमे उम्मत के लिये था ताकि उम्मत को येह बता दिया जाए कि नमाज़ में भूल हो जाए तो क्या त़रीक़ए कार अपनाना चाहिये जैसा कि इमामे मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मुअत्ता में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

''انى لأ نسى أو أنسى لأسنّ'' **तरजमा :** बेशक मैं भूलता हूं या भुला दिया जाता हूं ताकि सुन्नत क़ाइम हो सके ।

(مؤطا امام مالك ص ۸۴ مطبوعه نور محمد كراچى)

नमाज़ में लुक़्मे के अह़काम पर मुश्तमिल बा'ज़ अहादीसे मुबा-रका दर्जे ज़ैल हैं चुनान्चे

www.dawateislami.net

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रिवायत की

तरजमा : ''قال أمرنا النبی صلی الله علیه و سلم أن نرد علی الامام''

फ़रमाते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हमें हुक्म दिया कि हम इमाम पर उस की ग़-लती रद करें।

(مستدرك حاكم ص ۲۷۰ جلد اول دار الفكر بيروت)

इमाम ह़ाकिम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ मुस्तदरक में ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं

"قال قال علی کرم الله وجهه الکریم من السنة أن تفتح علی الامام اذا استطعمك قیل لأبی عبد الرحمن ما استطعام الامام قال اذاسقط"

तरजमा : फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہٗ ने फ़रमाया कि सुन्नत है कि जब इमाम तुम से लुक़्मा मांगे तो उसे लुक़्मा दो। अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा गया कि इमाम का मांगना क्या है ? फ़रमाया जब वोह कुछ छोड़ दे। (مستدرك حاكم ص ۲۷۰ جلد اول دار الفكر بيروت)

फ़त्हुल क़दीर में है "أنه صلی الله علیه و سلم قرأ فی الصلاة فترك کلمة فلما فرغ قال الم یکن فیکم أبی قال بلی قال هلا فتحت علی فقال ظننت أنها نسخت فقال صلی الله علی وسلم لو نسخت لأعلمتکم"

तरजमा : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने नमाज़ में क़िराअत की पस एक कलिमा आप ने न पढ़ा। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया कि क्या तुम में उबय्य मौजूद नहीं ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : क्यूं नहीं या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया तुम ने लुक़्मा क्यूं नहीं दिया ? ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि मैं ने गुमान किया कि शायद वोह ह़िस्सा मन्सूख़ हो गया है जो आप ने न पढ़ा। आप

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मन्सूख़ होता तो मैं तुम लोगों को ज़रूर बताता ।

(فتح القدير ص ۳۴۸ جلداول مكتبه رشيديه بالفاظ متقاربه فى ابوداود ص ۱۶۴ مطبوعه بيروت)

बदाएअ़ में है, ''عن ابن عمر رضی الله عنهما أنه قرأ الفاتحة فی صلاة المغرب فلم يتذكر سورة فقال نافع اذا زلزلت فقرأها ''

तरजमा : ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बारे में आता है वोह नमाज़े मग़रिब में थे जब सूरते फ़ातिह़ा पढ़ी तो आगे सूरत याद न बन पड़ी पस ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ''اذا زلزلت'' का लुक़्मा दिया तो फिर आप ने इस सूरत की तिलावत शुरूअ़ की । (بدائع الصنائع ص ۲۳٦ جلد اول ايچ ايم سعيد)

मुह़ीते़ बुरहानी में है, ''و عن عمر رضی الله عنه أنه قرأ سورة النجم و سجد فلما عاد الى القيام ارتج عليه فلقنه واحد ''اذا زلزلت الارض'' فقرأها ولم ينكر عليه''

(محيط برهانى ص ۱۵۴ ج ۲ ادارة القران كراچى)

तरजमा : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ नमाज़ पढ़ा रहे थे आप ने सूरए नज्म पढ़ी इसी दौरान आयते सज्दा पर सज्दा कर के जब क़ियाम की त़रफ़ लौटे तो आप भूल गए किसी ने ''اذا زلزلت الارض'' का लुक़्मा दिया पस आप ने येही आयत पढ़ी और इस पर किसी सह़ाबी ने भी इन्कार न किया ।

सह़ीह़ मुस्लिम में है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''من نابه شئ فی صلوته فليسبح فانه اذا سبح التفت اليه''

(صحيح مسلم، باب تقديم الجماعة من يصلى بهم، ص ۲۲۵، رقم ۴۲۱، مطبوعه دار ابن حزم بيروت)

तरजमा : जब नमाज़ में कोई अम्र ह़ादिस हो जाए तो سُبۡحٰنَ اللّٰہ कहो, जब سُبۡحٰنَ اللّٰہ कहा जाएगा तो इमाम मु-तवज्जेह हो जाएगा ।

www.dawateislami.net

पस मज़्कूरा बाला अह़ादीसे मुबा-रका लुक़्मा देने और लेने की अस्ल हैं। फ़ु-क़हाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ الله ने इस मस्अले में हमारी मज़ीद रहनुमाई की और मस्अलए मज़्कूर में पेश आने वाली मुख़्तलिफ़ सूरतों का हुक्म अपनी किताबों में तफ़्सील से तह़रीर किया। फ़क़ीर ने ब तौफ़ीक़े ख़ुदा और ब फ़ज़्ले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ब तुफ़ैले नज़रे मुर्शिद अपने असातिज़ा से रहनुमाई ह़ासिल करते हुए फ़ु-क़हाए किराम की बयान कर्दा उन्हीं सूरतों को एक जगह जम्अ़ करने की सअ़ूय की है ताकि अ़वामुन्नास की इन मसाइल तक आसानी से रसाई हो सके और इस मस्अले के बारे में लोगों में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़लत़ फ़हमियां पाई जाती हैं उन का इज़ाला हो सके। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में दुआ़ गो हूं कि अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए।

त़ालिबे दुआ़

सगे अ़त्त़ार **अल अह़क़र अ़ली असग़र** अल अ़त्त़ारिय्युल म-दनी

26 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1426 सि.हि.

ब मुत़ाबिक़ यकुम अक्तूबर 2005 सि.ई.

www.dawateislami.net

नमाज़ में लुक़्मे के मसाइल

सुवाल : नमाज़ में लुक़्मा देने और इमाम को लुक़्मा लेने से मु-तअ़ल्लिक़ शरीअ़त के क्या अह़काम हैं ?

जवाब : क़वानीने शरीअ़त के मुताबिक़ नमाज़ में अपने इमाम को लुक़्मा देना बा'ज़ सूरतों में फ़र्ज़ है, बा'ज़ सूरतों में वाजिब और बा'ज़ सूरतों में जाइज़ है। यूंही बा'ज़ सूरतों में ह़राम है बा'ज़ सूरतों में मक्रूह। बसा अवक़ात लुक़्मे का तअ़ल्लुक़ इमाम की क़िराअत के साथ होता है तो बसा अवक़ात इन्तिक़ालाते इमाम के साथ। अव्वलन इस किताब में नमाज़ में लुक़्मा से मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम बयान किये जाएंगे। इस के बा'द चन्द मसाइल सुवाल व जवाब की सूरत में बयान किये जाएंगे। इस किताब में ज़िक्र कर्दा अक्सर मसाइल फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ ही से लिये गए हैं कि जिस मस्अले में इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن का ह़वाला मौजूद हो उस की ह़ैसिय्यत मुसल्लमा होती है और येह भी एक ह़क़ीक़त है कि जो मसाइल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की किताबों में मिलते हैं, मु-तलाशिये इ़ल्म को हज़ारों किताबें छानने के बा'द भी नहीं मिलते। साह़िबे बहारे शरीअ़त सदरुश्शरीअ़ह बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़तावा र-ज़विय्या के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं "इस में हर मस्अले की ऐसी तह़क़ीक़ की गई है जिस की नज़ीर आज दुन्या में मौजूद नहीं और इस में हज़ारहा ऐसे मसाइल मिलेंगे जिन से उ-लमा के कान भी आशना नहीं।"

(बहारे शरीअ़त, स. 4, ह़िस्सए दुवुम, मत़्बूआ़ ज़ियाउल क़ुरआन)

www.dawateislami.net

चुनान्चे सय्यिदी व मुर्शिदी, शैख़े त़रीक़त, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, **ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तारीख़े पैदाइश 26 र-मज़ानुल मुबारक की निस्बत से, नमाज़ में लुक़्मा से मु-तअ़ल्लिक़ 26 ज़रूरी अह़काम दर्जे ज़ैल हैं :

﴿1﴾ इमाम जब ऐसी ग़-लत़ी करे जो मूजिबे फ़सादे नमाज़ हो (वोह ग़-लत़ी जिस से नमाज़ टूट जाती हो) तो उस का बताना और इस्लाह़ कराना हर मुक़्तदी पर फ़र्ज़ किफ़ाया है उन में से जो बता देगा सब पर से फ़र्ज़ उतर जाएगा और कोई न बताएगा तो जितने जानने वाले थे सब मुर-तकिबे ह़राम होंगे और सब की नमाज़ बात़िल हो जाएगी

ذلك لان الغلط لما كان مفسدا كان السكوت عن اصلاحه ابطالاً للصلاة و هو حرام بقوله تعالى ولا تبطلوا أعمالكم۔

तरजमा : क्यूं कि ग़-लत़ी जब मुफ़्सिदे नमाज़ हो तो उस की इस्लाह़ करने के बजाए ख़ामोश रहना नमाज़ को बात़िल कर देगा और नमाज़ बात़िल कर देना ह़राम है अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान की वजह से कि "अपने आ'माल बात़िल न करो।"

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 280, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴿2﴾ एक का बताना सब पर से फ़र्ज़ उस वक़्त साक़ित़ करेगा कि इमाम मान ले और काम चल जाए वरना औरों पर भी बताना फ़र्ज़ होगा यहां तक कि ह़ाजत पूरी और इमाम को वुसूक़ (ए'तिमाद) ह़ासिल हो जाए, बा'ज़ दफ़्आ ऐसा होता है कि एक के बताए से इमाम का अपनी ग़लत़ याद पर ए'तिमाद नहीं जाता और वोह उस की तस्ह़ीह़ को नहीं मानता और इस का मोह़ताज होता है कि मु-तअ़द्दद शहादतें इस की ग़-लत़ी पर गुज़रें तो यहां फ़र्ज़ होगा कि दूसरा भी बताए और अब भी

www.dawateislami.net

इमाम रुजूअ़ न करे तो तीसरा भी ताईद करे यहां तक कि इमाम सही़ह़ की त़रफ़ वापस आ जाए।

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 280, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾3﴿ अगर ग़-लत़ी ऐसी है जिस से वाजिब तर्क हो कर नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी हो तो उस का बताना हर मुक़्तदी पर वाजिबे किफ़ाया होगा और अगर एक बता देगा और उस के बताने से कार-रवाई हो जाए तो सब पर से वाजिब उतर जाएगा वरना सब गुनहगार रहेंगे।

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 281, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾4﴿ अगर ग़-लत़ी ऐसी हो कि जिस से न फ़सादे नमाज़ होता हो न तर्के वाजिब, जब भी हर मुक़्तदी को मुत़्लक़न बताने की इजाज़त है। (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 281, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर) मुही़त़ व आ़लमगीरी में है

والنظم للهنديه "ولو عرض للامام شئ فسبح المأموم، فلا بأس به"

तरजमा : अगर इमाम को कुछ भूल वाक़ेअ़ हुई और मुक़्तदी ने लुक़्मा देते हुए سُبْحٰنَ الله कहा तो कोई ह़रज नहीं।

(عالمگیری ص۹۹ ج اول مکتبہ حقانیہ۔ محیط برھانی ص۱۴۸ ج ۲ ادارۃ القرآن)

﴾5﴿ इमाम ग़-लत़ी कर के ख़ुद मु-तनब्बेह (बा ख़बर) हो गया और याद नहीं आता, याद करने के लिये रुका, अगर तीन बार سُبْحٰنَ الله कहने की मिक़्दार रुकेगा तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी हो जाएगी और सज्दए सह्व वाजिब होगा, तो इस सूरत में जब उसे रुका देखें, मुक़्तदियों पर बताना वाजिब होगा कि ख़ामोशी क़दरे ना जाइज़ तक न पहुंचे। या'नी इमाम को तीन मर्तबा سُبْحٰنَ الله की मिक़्दार ख़ामोश रहने का मौक़अ़ न दिया जाए।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 281, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ बा'ज़ ना वाक़िफ़ों की आ़दत होती है कि जब ग़-लत़ी करते हैं याद नहीं आता तो इज़्त़रारन उन से बा'ज़ कलिमात बे मा'ना सादिर हो जाते हैं कोई ''ऊं ऊं'' कहता है कोई कुछ और, इस से नमाज़ बात़िल हो जाती है तो जिस की येह आ़दत मा'लूम है जब रुकने पर आए मुक़्तदियों पर वाजिब है कि फ़ौरन बता दें क़ब्ल इस के कि वोह अपनी आ़दत के हुरूफ़ निकाल कर नमाज़ तबाह करे।

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 282, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾7﴿ इमाम तरावीह़ में अटके और आगे न पढ़ पाए या ऐसा हो कि रवानी में पढ़ते हुए कोई आयत या आयत का ह़िस्सा छोड़ कर बिग़ैर रुके या अटके आगे निकल जाए और ना जाइज़ मिक़्दार तक ख़ामोश रहना भी न पाया जाए, न ही मा'ना फ़ासिद होते हों तब भी मुक़्तदी को बताना चाहिये क्यूं कि इमाम के न ठहरने या फ़सादे मा'ना न होने के सबब अगर्चे नमाज़ पर असर नहीं पड़ेगा लेकिन चूंकि तरावीह़ में पूरे क़ुरआने अ़ज़ीम का ख़त्म करना मक़्सूद होता है और कुछ ह़िस्सा रह जाने से येह मक़्सूद पूरा नहीं होगा। चुनान्चे इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआने अ़ज़ीम हो तो मुक़्तदी को बताना चाहिये जब कि इमाम से न निकले या वोह आगे रवां हो जाए अगर्चे उस ग़-लत़ी से नमाज़ में कुछ ख़राबी न हो कि मक़्सूद ख़त्मे किताबे अ़ज़ीज़ है और वोह किसी ग़-लत़ी के साथ पूरा न होगा।

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 282, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾8﴿ तरावीह़ में अगर इमाम ने किसी जगह छोड़ा लेकिन मुक़्तदी ने न बताया और छोड़ना भी ऐसा था कि उस से नमाज़ में कोई फ़साद या कराहियत न आई तब भी मुक़्तदी को चाहिये कि बा'दे सलाम इमाम

www.dawateislami.net

को इत्तिलाअ़ दे, इमाम दूसरी तरावीह़ में उतने अल्फ़ाज़े करीमा का सह़ीह़ तौ़र पर इआ़दा कर ले मगर औला येही था कि उसी वक़्त बताता ।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 282, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾9﴿ बालिग़ मुक़्तदियों की त़रह़ तमीज़ दार बच्चा भी लुक़्मा दे सकता है । (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 284, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर, عالمگیری ص۹۹ ج اول مکتبہ حقانیہ) जब कि नमाज़ आती हो ।

﴾10﴿ जिसे सामेअ़ मुक़र्रर किया गया उस के इलावा दूसरा मुक़्तदी भी लुक़्मा दे सकता है जैसा कि इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाते हैं ''क़ौम का किसी को सामेअ़ मुक़र्रर कर देने के येह मा'ना नहीं होते कि उस के ग़ैर को बताने की इजाज़त नहीं और अगर कोई अपने जाहिलाना ख़यालात से येह क़स्द करे भी तो उस की मुमा-न-अ़त से वोह ह़क़ कि शर-ए़ मुत़ह्हर ने आ़म मुक़्तदियों को दिया क्यूंकर सल्ब (ख़त्म) हो सकता है ।''

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 284, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾11﴿ जो शख़्स भी लुक़्मा दे उस को चाहिये कि लुक़्मा देते वक़्त वोह क़िराअत की निय्यत न करे बल्कि लुक़्मा देने की निय्यत से वोह अल्फ़ाज़ कहे जैसा कि फ़तावा आ़लमगीरी में है

''الصحیح ان ینوی الفتح علی امامه دون القراءة (عالمگیری ج۱ ص۹۹ مکتبہ حقانیہ پشاور)

तरजमा : लुक़्मा देने वाला क़िराअत की निय्यत न करे बल्कि लुक़्मा देने की निय्यत से वोह अल्फ़ाज़ कहे ।'' फ़तावा शामी में है

لأن قراءة المقتدی منهی عنها و الفتح علی امامه غیر منهی عنه (ردالمحتار ص۳۸۲ ج۲ مکتبہ امدادیہ ملتان)

तरजमा : क्यूं कि क़िराअत से मुक़्तदी को मन्अ़ किया गया है जब कि लुक़्मा देना इसे मन्अ़ नहीं । (लिहाज़ा जो मन्अ़ है उस की निय्यत न करे)

www.dawateislami.net

﴾12﴿ देखा गया है कि एक तरावीह़ पढ़ाने वाले के पीछे कई कई ह़ाफ़िज़ खड़े लुक़्मे दे रहे होते हैं उन्हें अपनी निय्यत के बारे में मोह़तात़ रहना चाहिये अगर उन की निय्यत ह़ाफ़िज़ साहिब को परेशान करने की हुई तो ऐसा करना ह़राम होगा इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं ''क़ारी (पढ़ने वाले) को परेशान करने की निय्यत ह़राम है रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं بشروا و لاتنفروا و یسروا ولا تعسروا **तरजमा :** लोगों को ख़ुश ख़बरियां सुनाओ नफ़्रत न दिलाओ, आसानी पैदा करो तंगी न करो'' और बेशक आज बहुत से हुफ़्फ़ाज़ का येह शेवा है, येह बताना नहीं बल्कि ह़क़ीक़तन यहूद के उस फ़े'ल में दाख़िल है (जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में हुवा, फ़रमाया गया) **لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ الْغَوْا فِيْهِ** (پارہ۲۴سورۃ حم السجدۃ آیت۲۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** (काफ़िर कहते हैं) येह क़ुरआन न सुनो और इस में बेहूदा ग़ुल (शोर) करो।''

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 287, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

﴾13﴿ अगर किसी की निय्यत इमाम को परेशान करने की तो न हो मगर अपना ह़िफ़्ज़ जतलाना मक़्सूद हो तो येह भी ह़राम है। जैसा कि इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाते हैं ''अपना ह़िफ़्ज़ जताने के लिये ज़रा ज़रा शुबे पर रोकना रिया है और रिया ह़राम है ख़ुसूसन नमाज़ में।''

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 287, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

www.dawateislami.net

﴾14﴿ मुसल्ली (नमाज़ी) ने अपने इमाम के सिवा दूसरे को लुक़्मा दिया (तो लुक़्मा देने वाले की) नमाज़ जाती रही जिस को लुक़्मा दिया है वोह नमाज़ में हो या न हो, मुक़्तदी हो या मुन्फ़रिद या किसी और का इमाम। (बहारे शरीअ़त, स. 150, हिस्सा : 3, मक्तबए र-ज़विय्या) यूं ही रद्दुल मुह़्तार में है وفتحه على غير امامه لانه تعلم و تعليم من غير حاجة بحرو هو شامل لفتح المقتدى على مثله وعلى المنفرد وعلى غير المصلى وعلى امام الآخر۔ (ردالمحتار ص ۳۸۱ ج ۲ مکتبہ امدادیہ ملتان)

तरजमा : और अपने इमाम के इ़लावा किसी और को लुक़्मा देना उस की नमाज़ को फ़ासिद कर देगा कि लुक़्मा देना ता'लीम व तअ़ल्लुम है (जो नमाज़ में ह़ाजत के वक़्त तो दुरुस्त है) और यहां ह़ाजत न होने के बाइ़स नमाज़ फ़ासिद करने का बाइ़स होगा ऐसा ही बह्र में है कि "अपने इमाम के ग़ैर को लुक़्मा देना" उन सब सूरतों को शामिल है जिन में मुक़्तदी, मुक़्तदी को लुक़्मा दे, मुन्फ़रिद को लुक़्मा दे, या ग़ैर नमाज़ी को लुक़्मा दे या उस इमाम को लुक़्मा दे जिस की इक़्तिदा में न हो। या'नी इन सूरतों में भी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।

﴾15﴿ मुसल्ली (नमाज़ी) जब अपने इमाम के सिवा किसी और को लुक़्मा दे मगर ब निय्यते तिलावत दे न कि उस को बताने की ग़रज़ से तो उस की नमाज़ फ़ासिद न होगी चुनान्चे फ़तावा आ़लमगीरी में है و لو فتح غير امامه تفسد لا اذا اعنى به التلاوة دون التعليم كذا فى المحيط (فتاوی ہندیہ ص ۹۹ ج ۱ مکتبہ حقانیہ پشاور)

तरजमा : अगर अपने इमाम के इ़लावा किसी को लुक़्मा दिया तो उस की नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी लेकिन जब उस के सिखाने के बजाए तिलावत की निय्यत की हो तो नमाज़ फ़ासिद न होगी इसी त़रह़ मुह़ीत़ में है।

www.dawateislami.net

﴾16﴿ अपने मुक़्तदी के सिवा दूसरे का लुक़्मा लेना भी मुफ़्सिदे नमाज़ है अलबत्ता अगर उस के बताते वक़्त इसे ख़ुद याद आ गया उस के बताने से नहीं या'नी अगर वोह न बताता जब भी इसे याद आ जाता उस के बताने को दख़्ल नहीं तो उस का पढ़ना मुफ़्सिद नहीं। फ़तावा शामी में है ''ان حصل التذکر بسبب الفتح تفسد مطلقا ای سواء شرع فی التلاوة قبل تمام الفتح أو بعده لوجود التعلم و ان حصل تذکره من نفسه لا بسبب الفتح لا تفسد مطلقا و کون الظاہر أنه حصل بالفتح لا یؤثر بعد تحقق أنه من نفسه لأن ذالك من أمور الدیانة لا القضاء حتی یبنی علی الظاہر ألا تری أنه لو فتح علی غیره امامه قاصداً القراء ة لا التعلیم لا تفسد مع أن ظاہر حاله التعلیم''۔ (ردالمحتار ص۳۸۲ ج۲ مکتبہ امدادیہ)

तरजमा : ऐसी सूरत में अगर इमाम को लुक़्मे की वजह से याद आया तो मुत़्लक़न नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी ख़्वाह इमाम ने लुक़्मा ख़त्म होने से पहले तिलावत शुरूअ़ कर दी हो या लुक़्मा ख़त्म होने के बा'द शुरूअ़ की हो, तअ़ल्लुम के पाए जाने की वजह से और अगर इसे ख़ुद ही याद आ गया हो न कि लुक़्मे की वजह से या'नी अगर लुक़्मा न आता तब भी इसे याद आ जाता तो ऐसी सूरत में मुत़्लक़न नमाज़ न टूटेगी। येह बात ज़ाहिर है कि जब येह साबित हो जाए कि लुक़्मा अज़्ख़ुद आया है तो लुक़्मे का आना नमाज़ पर असर नहीं डालेगा और अज़्ख़ुद याद आने या न आने का मुआ़-मला दियानत पर मौक़ूफ़ है न कि क़ज़ा पर कि ज़ाहिर पर हुक्म लगाएं ऐसा नहीं हो सकता। क्या तू नहीं देखता कि अगर कोई अपने इमाम के इ़लावा ग़ैर को

www.dawateislami.net

तिलावत की निय्यत करते हुए लुक़्मा दे तो उस की नमाज़ फ़ासिद न होगी अगर्चे कि ज़ाहिरी ह़ालत अ़-मले ता'लीम को ज़ाहिर करती है।

﴾17﴿ अपने इमाम को लुक़्मा देना और इमाम का लुक़्मा लेना मुफ़्सिद नहीं हां अगर मुक़्तदी ने दूसरे से सुन कर जो नमाज़ में इस का शरीक नहीं है लुक़्मा दिया और इमाम ने ले लिया तो सब की नमाज़ गई और इमाम ने न लिया तो सिर्फ़ उस मुक़्तदी की गई। (बहारे शरीअ़त, स. 151, हिस्सा : 3, मक्तबए र-ज़विय्या) फ़तावा शामी में है

أن المؤتم لما تلقن من خارج بطلت صلاته فإذا فتح على امامه وأخذ منه بطلت صلاته

(ردالمحتار ص ۳۸۲ ج ۲ مکتبہ امدادیہ ملتان)

तरजमा : जब मुक़्तदी ने ख़ारिज से लुक़्मा लिया तो ख़ुद उस की नमाज़ टूट गई पस जब वोह इमाम को लुक़्मा दे और वोह ले ले तो उस की नमाज़ भी टूट जाएगी।

﴾18﴿ मुक़्तदी को शुबा हुवा कि इमाम कुछ छोड़ गया है मगर उसे यक़ीन ह़ासिल नहीं इस शुबे की कैफ़िय्यत में उस वक़्त लुक़्मा देना जाइज़ होगा कि जब उसे येह गुमान हो कि इमाम ने जो छोड़ा है अगर न बताया गया तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी तो यक़ीनन होने के बा वुजूद लुक़्मा देना जाइज़ होगा अगर फ़सादे नमाज़ का पहलू न हो तो फिर महज़ शुबे पर बताना हरगिज़ जाइज़ नहीं। जैसा कि इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाते हैं :

''जब ग़-लती मुफ़्सिदे नमाज़ न हो तो महज़ शुबे पर बताना हरगिज़ जाइज़ नहीं बल्कि सब्र वाजिब है।'' आगे मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं : ''हुरमत की वजह ज़ाहिर है कि फ़त्ह़ (लुक़्मा) ह़क़ीक़तन कलाम है और नमाज़ में कलाम ह़राम व मुफ़्सिदे नमाज़ मगर ब ज़रूरत इजाज़त हुई जब इसे ग़-लती होने पर ख़ुद यक़ीन नहीं तो मुबीह़ में शक वाक़ेअ़

www.dawateislami.net

हुवा और मह़रम मौजूद है लिहाज़ा ह़राम हुवा जब इसे शुबा है मुम्किन कि इसी की ग़-लती़ हो और ग़लत़ बताने से उस की नमाज़ जाती रहेगी और इमाम अख़्ज़ करेगा तो उस की और सब की नमाज़ फ़ासिद होगी तो ऐसे अम्र पर इक़्दाम जाइज़ नहीं हो सकता।''

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 287, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

《19》 मुक़्तदी को शक हुवा कि इमाम ने कुछ छोड़ दिया है ह़ालां कि इमाम ने दुरुस्त पढ़ा था लिहाज़ा उस ने लुक़्मा दिया और इमाम ने ले लिया सब की नमाज़ जाती रही अगर इमाम ने न लिया तो सिर्फ़ लुक़्मा देने वाले की गई जैसा कि इमामे अहले सुन्नत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या में इर्शाद फ़रमाते हैं ''जब इसे शुबा हो तो मुम्किन है कि इसी की ग़-लती़ हो और ग़लत़ बताने से इस की नमाज़ जाती रहेगी और इमाम अख़्ज़ करेगा तो उस की और सब की नमाज़ फ़ासिद होगी।''

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 287, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

《20》 तरावीह़ में सह्वन ग़लत़ बताना मुफ़्सिदे नमाज़ नहीं तैसीरन येही हुक्म है

اليہ مال امام اهل السنة مجدد الدين والملة الامام أحمد رضا خان عليه رحمة الرحمن فی الفتاوٰی الرضوية ۔

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 284, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

《21》 फ़ौरन ही लुक़्मा देना मक्रूह है बल्कि थोड़ा तवक़्क़ुफ़ चाहिये कि शायद इमाम ख़ुद निकाल ले फ़तावा शामी में है ''يكره ان يفتح من ساعته'' (ردالمحتار ص۳۸۲ ج۲ مکتبہ امدادیہ) मगर जब कि उस की आ़दत इसे मा'लूम हो कि रुकता है तो बा'ज़ ऐसे हुरूफ़ निकलते

www.dawateislami.net

हैं जिन से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है तो फ़ौरन बताए।

(बहारे शरीअ़त, स. 151, हिस्सा : 3, मक्तबए र-ज़विय्या, محیط برھانی ص۱۵۴ ج۲ ادارۃ القران)

﴾22﴿ यूं ही इमाम को मक्रूह है कि मुक़्तदियों को लुक़्मा देने पर मजबूर करे बल्कि किसी दूसरी सूरत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाए या दूसरी आयत शुरूअ़ कर दे बशर्ते कि उस का वस्ल (मिलाना) मुफ़्सिदे नमाज़ न हो और अगर ब क़दरे ह़ाजत पढ़ चुका है तो रुकूअ़ करे मजबूर करने के येह मा'ना हैं कि बार बार पढ़े या साकित खड़ा रहे। जैसा कि फ़तावा आ़लमगीरी में है

"ولا ينبغى للامام أن يلجئهم الى الفتح لانه يلجئهم الى القراءة خلفه وأنه مكروه بل يركع ان قرأ قدرما تجوز به الصلاة و الاينتقل الى آية اخرى كذافى الكافى و تفسير الالجاء أن يردد الآية او يقف ساكتا كذا فى النهاية"

(عالمگیری ج ا ص ۹۹ مکتبہ حقانیہ پشاور)

तरजमा : "इमाम को चाहिये कि मुक़्तदी को लुक़्मा देने की तरफ़ मजबूर न करे क्यूं कि वोह इन को अपने पीछे क़िराअत करने पर मजबूर करेगा और येह मजबूर करना मक्रूह है बल्कि इसे चाहिये कि अगर इतनी क़िराअत कर चुका था जो नमाज़ के सह़ीह़ होने के लिये काफ़ी थी तो रुकूअ़ कर ले या किसी और आयत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाए और इन को मजबूर करने के मा'ना येह हैं कि वोह बार बार आयत की तकरार करता रहा या फिर ख़ामोश खड़ा रहा।"

﴾23﴿ जहां लुक़्मा नहीं देना था वहां एक ही दफ़्अ़ा लुक़्मा देने से नमाज़ टूट जाएगी नमाज़ टूटने के लिये लुक़्मे की तकरार शर्त़ नहीं फ़तावा आ़लमगीरी में है "و تفسد صلاته بالفتح مرة و لايشترط فيه تكرارا و هو الاصح هكذا فى فتاوى قاضيخان"

(فتاوی عالمگیری ص ۱۰۱ جلداول قدیمی کتب خانہ کراچی)

www.dawateislami.net

तरजमा : बे मह़ल लुक़्मा देने पर एक दफ़्आ़ देने से ही नमाज़ टूट जाती है।

﴾24﴿ लुक़्मा देने वाले को इस बात की इजाज़त नहीं कि वोह क़ुरआने पाक देख कर लुक़्मा दे कि मुस्ह़फ़ देख कर लुक़्मा देना, लुक़्मा देने वाले की नमाज़ को फ़ासिद कर देता है कि नमाज़ में मुस्ह़फ़ शरीफ़ से देख कर क़ुरआन पढ़ना मुत़्लक़न मुफ़्सिदे नमाज़ है यूं ही अगर मेह़राब वग़ैरा में लिखा हो उसे देख कर पढ़ना भी मुफ़्सिदे नमाज़ है हां अगर याद पर पढ़ता हो मुस्ह़फ़ या मेह़राब पर फ़क़त़ नज़र पड़ गई तो ह़रज नहीं। (درمختار، ردالمحتار ص۳۸۴ ج۲ مکتبہ امدادیہ ملتان) चुनान्चे जिस सूरत में इस की नमाज़ टूट जाती है इस ने इमाम को लुक़्मा दिया तो उस की नमाज़ भी गई कि इस के मुस्ह़फ़ वग़ैरा से देख कर नमाज़ पढ़ते ही ख़ुद इस की नमाज़ फ़ासिद हो गई और वोह नमाज़ से ख़ारिज हो गया और नमाज़ से ख़ारिज का लुक़्मा लेने पर इमाम की नमाज़ भी फ़ासिद हो गई।

﴾25﴿ कहां ग़-लत़ी मुफ़्सिदे नमाज़ है और कहां नहीं इस का मा'लूम पड़ना और वोह भी नमाज़ की ह़ालत में हर एक का काम नहीं जैसा कि इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं ''ग़-लत़ी का मुफ़्सिदे मा'ना होना (या'नी ग़-लत़ी ऐसी हो जिस से मा'ना फ़ासिद हो जाएं) मब्नाए इफ़्सादे नमाज़ (नमाज़ के फ़साद की वजह) है, ऐसी चीज़ नहीं जिसे सहल (आसानी से) जान लिया जाए, हिन्दूस्तान में जो उ़-लमा गिने जाते हैं उन में चन्द ही ऐसे हो सकें कि नमाज़ पढ़ते में इस पर मुत्तलअ़ हो जाएं हज़ार जगह होगा कि वोह इफ़्साद गुमान करेंगे और ह़क़ीक़तन फ़साद न होगा जैसा कि हमारे फ़तावा की मुरा-ज-अ़त (या'नी फ़तावा के पढ़ने) से ज़ाहिर होता है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़,

www.dawateislami.net

स. 287, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर) लिहाज़ा जहां फ़सादे मा'ना का शुबा हो वहां अपने तौ़र पर कोई फ़ैसला करने के बजाए जय्यिद उ़-लमा से रुजूअ़ किया जाए।

﴾26﴿ लुक़्मा देने का मत़लब येह है कि अस्ल में लुक़्मा देना मुक़्तदी की त़रफ़ से इमाम को कुछ सिखाना और इमाम का मुक़्तदी से सीखना है। ह़ालते नमाज़ सीखने और सिखाने का मौक़अ़ नहीं बल्कि येह उमूर नमाज़ के फ़ासिद हो जाने का बाइ़स हैं मगर ज़रूरत की जगह पर या उन मक़ामात पर जहां लुक़्मा देने के बारे में नस्स वारिद है शरीअ़त ने इस की इजाज़त दी और ज़रूरत और नस्स में बयान कर्दा जगह की ह़द तक नमाज़ में लुक़्मा देने और लेने वाले पर से नमाज़ टूटने का ह़ुक्म मुआ़फ़ रखा, बदाएउ़स्सनाएअ़ में है

''اذا عرض للامام شئ فسبح المأموم لا بأس به لان القصد به اصلاح الصلوة فسقط حكم الكلام عنه للحاجة الى الاصلاح''

(بدائع الصنائع ص ۲۳۵ جلد اول، ایچ ایم سعید)

जब इमाम को कुछ भूल वाक़ेअ़ हो तो मुक़्तदी के लुक़्मा देने में कोई ह़रज नहीं क्यूं कि इस का इरादा नमाज़ की इस्लाह़ का है इस लिये ह़ाजत की बिना पर इस के लुक़्मा देने पर कलाम होने का ह़ुक्म साक़ित़ कर दिया गया।

लेकिन जहां कहीं बे मह़ल (या'नी जहां इजाज़त नहीं थी वहां) लुक़्मा दिया गया तो नमाज़ टूटने का अस्ल ह़ुक्म लौट आएगा। म-सलन जब इमाम को वापस आने की इजाज़त न हो तो ऐसे मौक़अ़ पर लुक़्मा देना बे मह़ल है और किसी ने लुक़्मा दिया तो उस की नमाज़ गई। जैसा कि इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा

www.dawateislami.net

ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं ''हमारे इमाम के नज़्दीक अस्ल इन मसाइल में येह है कि बताना अगर्चे लफ़्ज़न क़िराअत या ज़िक्र म-सलन तस्बीह़ और तक्बीर है और येह सब अज्ज़ा व अज़्कारे नमाज़ से हैं मगर (येह बताना) मअ़न कलाम है कि इस का ह़ासिल इमाम से ख़ित़ाब करना और उसे सिखाना होता है या'नी तू भूला इस के बा'द तुझे येह करना चाहिये। पर ज़ाहिर कि इस से येही ग़रज़ मुराद होती है और सामेअ़ को भी येही मा'ना मफ़्हूम, तो उस के कलाम होने में क्या शक रहा अगर्चे सू-रतन क़ुरआन या ज़िक्र व लिहाज़ा अगर नमाज़ में किसी यह़्या नामी को ख़ित़ाब की निय्यत से येह आयते करीमा ''یٰیحیٰی خذ الکتاب بقوۃ'' पढ़ी बिल इत्तिफ़ाक़ नमाज़ जाती रही ह़ालां कि वोह ह़क़ीक़तन क़ुरआन है इस बिना पर क़ियास येह था कि मुत़्लक़न बताना अगर्चे बर महल हो मुफ़्सिदे नमाज़ हो, कि जब वोह ब लिह़ाज़े मा'ना कलाम ठहरा तो बहर ह़ाल इफ़्सादे नमाज़ करेगा (या'नी नमाज़ तोड़ देगा) मगर ह़ाजते इस्लाह़े नमाज़ के वक़्त या जहां ख़ास नस्स वारिद है हमारे अइम्मा ने इस क़ियास को तर्क फ़रमाया ब हुक्मे इस्तिह़्सान जिस के आ'ला वुजूह से नस्स व ज़रूरत है जवाज़ का हुक्म दिया।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, स. 258, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

मज़्कूरा बाला ज़ाबिते पर कसीर मसाइल का इस्तिख़्राज होता है जैसा कि सुवाल जवाब की सूरत में आने वाले मसाइल से बख़ूबी मा'लूम हो जाएगा।

www.dawateislami.net

लुक़्मा से मु-तअ़ल्लिक़ अहम सुवाल और उन के जवाब

सुवाल : इमाम की निय्यत चार फ़र्ज़ों की थी पहली दो रक्अ़त ख़त्म कर चुका था बीच में अत्तहि़य्यात भूल गया और अल्लाहु अक्बर कह कर खड़ा हो गया बा'द को मुक़्तदी ने बताया वोह बैठ गया, अत्तहि़य्यात पढ़ी और आख़िर में सज्दए सह्व किया। आया मुक़्तदी की, इमाम की नमाज़ हुई या नहीं ?

الجواب بعون الملك الوهاب

अगर इमाम अभी पूरा सीधा खड़ा न होने पाया था कि मुक़्तदी ने बताया और वोह (या'नी इमाम) बैठ गया तो सब की नमाज़ हो गई और सज्दए सह्व की ह़ाजत न थी और अगर इमाम पूरा खड़ा हो गया था इस के बा'द मुक़्तदी ने बताया तो मुक़्तदी की नमाज़ उसी वक़्त जाती रही और जब उस के कहने से इमाम लौटा तो उस की भी गई और सब की गई और अगर मुक़्तदी ने उस वक़्त बताया था कि इमाम अभी पूरा सीधा न खड़ा हुवा था कि इतने में पूरा सीधा हो गया इस के बा'द लौटा तो मज़्हबे असह़्ह़ में नमाज़ हो तो सब की गई मगर मुख़ा-ल-फ़ते हुक्म के सबब मक्रूह हुई कि सीधा खड़ा होने के बा'द क़ा'दए ऊला के लिये लौटना जाइज़ नहीं। नमाज़ का इआ़दा करें ख़ुसूसन एक मज़्हबे क़वी पर नमाज़ हुई ही नहीं तो इआ़दा फ़र्ज़ है। (फ़तावा र-ज़विय्या, स. 214, जि. 8, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर,

(کذافی الھندیہ بقولہ "و لا یسبح اذا قام الی الاخریین" ص ۹۹ ج اول مکتبہ حقانیہ پشاور

सुवाल : इमाम को क़ा'दए ऊला में अपनी आ़दत से देर लगी और मुक़्तदी ने येह सोच कर कि इमाम को सह्व हुवा है बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कही ताकि इमाम को इत्तिलाअ़ हो जाए कि येह क़ा'दए ऊला है आख़िरी क़ा'दह नहीं, मुक़्तदी की नमाज़ फ़ासिद हुई या नहीं ?

www.dawateislami.net

الجواب بعون الملك الوهاب

मुक़्तदी की नमाज़ फ़ासिद हो गई कि जब इमाम को क़ा'दए ऊला में देर हुई और मुक़्तदी ने इस गुमान से कि येह क़ा'दए अख़ीरा समझा है तम्बीह की तो दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो वाक़ेअ़ में इस का गुमान ग़लत़ होगा या'नी इमाम क़ा'दए ऊला ही समझा है और देर इस वजह से हुई कि इस ने इस बार अत्तह़िय्यात ज़ियादा तरतील से अदा की जब तो ज़ाहिर है मुक़्तदी का बताना न सिर्फ़ बे ज़रूरत बल्कि मह्ज़ ग़लत़ वाक़ेअ़ हुवा तो यक़ीनन मुफ़्सिदे नमाज़ हुवा। इस के बर ख़िलाफ़ अगर मुआ़-मला येह था कि इस का गुमान वाक़ेई़ दुरुस्त था या'नी इमाम ने क़ा'दए ऊला को क़ा'दए अख़ीरा समझा था तब भी इस का बताना मह्ज़ लग़्व व बे ह़ाजत है और इस्लाह़े नमाज़ से इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं कि जब इमाम इतनी ताख़ीर कर चुका जिस से मुक़्तदी इस के सह्व पर मुत्त़लअ़ हुवा तो ला जरम येह ताख़ीर ब क़दरे कसीर हुई और जो कुछ होना था या'नी वाजिब का तर्क होना और सज्दए सह्व का लाज़िम होना वोह हो चुका, अब इस के बताने से इस का इज़ाला नहीं हो सकता और इस से ज़ियादा किसी दूसरे ख़लल का अन्देशा नहीं जिस से बचने को येह फ़े'ल किया जाए लिहाज़ा मुक़्तज़ाए नज़रे फ़िक़्ही (या'नी फ़िक़्ही नज़र का तक़ाज़ा येह है कि) इस सूरत में भी फ़सादे नमाज़ है। नज़ीर इस की येह है कि जब इमाम क़ा'दए ऊला को छोड़ कर पूरा खड़ा हो जाए तो अब मुक़्तदी बैठने का इशारा न करे, वरना हमारे इमाम के मज़हब पर मुक़्तदी की नमाज़ जाती रहेगी कि पूरा खड़ा होने के बा'द इमाम को क़ा'दए ऊला की त़रफ़ औ़द करना, ना जाइज़ था तो मुक़्तदी का बताना मह्ज़ बे फ़ाएदा रहा और अपने अस्ली हुक्म की रू से कलाम ठहर कर मुफ़्सिदे नमाज़ हुवा लेकिन जिस वक़्त इमाम सलाम फैरना शुरूअ़ करने लगे तो अब ह़ाजत

www.dawateislami.net

मु-तह़क़्क़िक़ होने की वजह से लुक़्मा देना चाहिये कि अब न बताने में ख़लल व फ़सादे नमाज़ का अन्देशा है कि इमाम तो अपने गुमान में नमाज़ तमाम कर चुका।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, स. 264, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

सुवाल : लुक़्मा किन अल्फ़ाज़ के साथ देना चाहिये ?

الجواب بعون الملك الوهاب

जब इमाम क़ुरआन भूले तो जो भूला है वोह बताए, बेहतर येह है कि जहां से भूला है उस के पीछे की आयत बताए फिर वोह आयत जो येह भूला है जैसा कि फ़तावा तातार ख़ानिया में है

''و فی الفتاوی الحجة و الاولی اذا فتح علی امامه أن یقرأ آیة قبلهائم وصلها بما معه کیلا یشبه التعلیم والتعلّم و هذا لیس بلازم''

(فتاوی تاتارخانیہ ص ۵۸۱ ج اول ادارۃ القران)

तरजमा : फ़तावा हिज्जा में है औला येह है कि जब अपने इमाम को लुक़्मा दे तो पहले मा क़ब्ल की आयत पढ़े फिर बा'द वाली को मिलाए ताकि ह़त्तल इम्कान उस का लुक़्मा देना ता'लीम व तअ़ल्लुम के मुशाबेह न हो लेकिन इस त़रह़ करना या'नी मा क़ब्ल की आयत से लुक़्मा देना लाज़िम नहीं। या'नी जो भूला है सिर्फ़ वोह बता दी तब भी दुरुस्त है।

अगर इमाम सूरह में से कुछ पढ़ते पढ़ते भूल गया आगे याद नहीं आता तो येह भी जाइज़ है कि किसी और सूरह का लुक़्मा दे दिया जाए चुनान्चे मुह़ीते़ बुरहानी में है

''وعن عمر رضی الله عنه أنه قرأ سورة النجم وسجد فلما عاد الی القیام ارتج علیه فلقنه واحد ''اذا زلزلت الارض'' فقرأها و لم ینکر علیه''۔

(محیط برھانی ص ۱۵۴ ج ۲ ادارۃ القران کراچی)

www.dawateislami.net

तरजमा : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नमाज़ पढ़ा रहे थे आप ने सूरए नज्म पढ़ी इसी दौरान आयते सज्दा पर सज्दा कर के जब क़ियाम की त़रफ़ लौटे तो आप भूल गए किसी ने ''اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ'' का लुक़्मा दिया पस आप ने येही आयत पढ़ी और इस पर किसी सह़ाबी ने भी इन्कार न किया।

जब इन्तिक़ाले रुक्न या'नी एक रुक्न से दूसरे रुक्न की त़रफ़ आने में सह्व हो तो बेहतर येह है कि तस्बीह़ के ज़रीए लुक़्मा दे तक्बीर कही तो येह भी जाइज़ है। चुनान्चे तातार ख़ानिया में है

''المصلی اذا کبر بنیة أن یعلم غیره أنه فی الصلاة لا تفسد صلاته،الاولی التسبیح لقوله صلی الله علیه و سلم ''التسبیح للرجال و التصفیق للنساء'' (فتاوی تاتارخانیہ ص۵۷۵ ج اول ادارۃ القران)

फ़तावा अम्जदिय्या में है ''मुक़्तदी को ऐसे मौक़अ़ पर (जब इमाम इन्तिक़ाले रुक्न में भूल जाए) जब कि इमाम को मु-तवज्जेह करना हो سُبْحٰنَ اللّٰہ या اَللّٰہُ اَکْبَر कहे जिस से इमाम को ख़याल हो जाए और नमाज़ को दुरुस्त कर ले सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा में ह़दीस है

''مالی رأیتکم اکثرتم التصفیق من نابه شئ فی صلاته فلیسبح فانه اذا سبح التفت الیه و انما التصفیق للنساء''

तरजमा : मैं देखता हूं कि जब कोई नमाज़ में भूलता है तो तुम में से अक्सर हाथ पर हाथ मार कर उसे मु-तवज्जेह करते हो पस अगर कोई नमाज़ में भूले तो तस्बीह़ कहो कि जब कोई तस्बीह़ कहेगा तो इमाम लौट आएगा और तस्फ़ीक़ या'नी हाथ पर हाथ मारना तो सिर्फ़ औ़रतों के लिये है।''

(फ़तावा अम्जदिय्या, स. 187, जि. अव्वल, मक्तबए र-ज़विय्या कराची)

www.dawateislami.net

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते हैं तीन आयत के बा'द लुक़्मा नहीं देना चाहिये अगर कोई दे तो उस की नमाज़ फ़ासिद हो जाती है, क्या येह दुरुस्त है ?

الجواب بعون الملك الوهاب

लोगों का येह ख़याल ग़लत़ है, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाते हैं ''इमाम जहां ग़-लत़ी करे, मुक़्तदी को जाइज़ है कि उसे लुक़्मा दे अगर्चे कि हज़ार आयतें पढ़ चुका हो, येही सह़ीह़ है रद्दुल मुह़तार में है ''الفتح علی امامه غیر منهی عنه بحر'' **तरजमा :** अपने इमाम को लुक़्मा देना मन्अ़ नहीं। इसी में है

سواء قرء الامام قدر ما یجوز به الصلوة ام لا إنتقل الی آیة أخری أم لا تکرر الفتح ام لا هو الاصح نهر

तरजमा : ख़्वाह इमाम ने इतनी क़िराअत कर ली हो जो नमाज़ के लिये काफ़ी थी या न की हो, ख़्वाह वोह दूसरी आयत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गया हो या न हुवा हो, लुक़्मा बार बार दिया हो या एक ही बार दिया हो येही असह़ह़ है।''

(फ़तावा र-ज़विय्या, स. 371, जि. 6, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर, (ردالمحتار ص ۳۸۲ مکتبہ امدادیہ ملتان)

सुवाल : इमाम तक्बीर कह कर रुकूअ़ में चला गया और दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल गया फिर मुक़्तदी के लुक़्मा देने पर रुकूअ़ से वापस हुवा, दुआ़ए क़ुनूत पढ़ी फिर रुकूअ़ किया और आख़िर में सज्दए सह्व किया तो नमाज़ हुई या नहीं ?

www.dawateislami.net

الجواب بعون الملك الوهاب

जो शख़्स दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल जाए और रुकूअ़ में चला जाए तो उस के लिये जाइज़ नहीं कि वोह दुआ़ए क़ुनूत पढ़ने के लिये रुकूअ़ से पलटे बल्कि हुक्म है कि वोह नमाज़ पूरी करे और आख़िर में सज्दए सह्व करे फिर अगर ख़ुद ही याद आ जाए और रुकूअ़ से पलट कर दुआ़ए क़ुनूत पढ़े तो असह्ह़ येह है कि गुनाहगार हुवा मगर नमाज़ फ़ासिद न हुई। जैसा कि इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن इसी क़िस्म के एक सुवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं "(रुकूअ़ में) तस्बीह़ पढ़ चुका हो या अभी कुछ न पढ़ने पाया हो उसे क़ुनूत पढ़ने के लिये रुकूअ़ छोड़ने की इजाज़त नहीं अगर क़ुनूत के लिये क़ियाम की त़रफ़ औ़द किया गुनाह किया फिर क़ुनूत पढ़े या न पढ़े उस पर सज्दए सह्व है (जब कि भूल कर वापस आया हो)।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, स. 212, जि. 8, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

चुनान्चे सूरते मज़्कूरा में मुक़्तदी ने नमाज़ की इस्लाह़ की ख़ातिर जो लुक़्मा दिया वोह दुरुस्त न था कि उस का लुक़्मा देना इस जगह इस्लाहे़ नमाज़ नहीं कि ख़ुद इमाम को मन्अ़ है कि वोह रुकूअ़ से वापस लौटे लिहाज़ा उस ने बे महल लुक़्मा दिया जिस की बिना पर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई फिर इमाम उस के बताने से पलटा तो इमाम की भी फ़ासिद हो गई कि उस ने उस का लुक़्मा लिया जो नमाज़ से बाहर था और इस के सबब किसी की भी नमाज़ नहीं हुई। येही हुक्म फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल में भी बयान किया गया है।

(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, स. 386, जि. अव्वल, शब्बीर बिरादर्ज़ लाहोर)

www.dawateislami.net

सुवाल : ज़ैद नमाज़ पढ़ा रहा था कि दौराने क़िराअत भूल गया उस ने कहीं और से सूरत शुरूअ़ कर दी उस के शुरूअ़ करने के बा'द मुक़्तदी ने लुक़्मा दिया। लुक़्मा देने वाले की नमाज़ हुई या नहीं ?

الجواب بعون الملك الوهاب

लुक़्मा देने वाले की नमाज़ हो जाएगी जैसा कि इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं, ''सह़ीह़ येह है कि जब इमाम क़िराअत में भूले मुक़्तदी को मुत़्लक़न बताना रवा अगर्चे क़दरे वाजिब पढ़ लिया हो अगर्चे एक से दूसरे की त़रफ़ इन्तिक़ाल ही किया हो कि सूरते औला में गो वाजिब अदा हो चुका मगर एह़तिमाल है कि रुकने, उलझ्ने के सबब कोई लफ़्ज़ उस की ज़बान से ऐसा निकल जाए जो मुफ़्सिदे नमाज़ हो लिहाज़ा मुक़्तदी को अपनी नमाज़ दुरुस्त रखने के लिये बताने की ह़ाजत है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, स. 258, जि. 7)

ان قلت عبارة الهداية صريحةفی فساد الصلاة فی هذه الصورة حيث قال الامام المرغينانی رحمه الله تعالی عليه" لو كان الامام انتقل الی آية اخری تفسد صلوة الفاتح و تفسد صلوة الامام لو اخذ بقوله لوجود التلقين و التلقن من غير ضرورة۔ (ہدایہ اولین باب مایفسد الصلوۃ ۱۳۶ مکتبہ شرکت علمیہ ملتان)

اقول: ما ذكر صاحب الهدايةهو مرجوح كما بيّنها امام اهل السنة مجدد الدين و الملةالمفتی الحافظ القاری مولانا أحمد رضا خان عليه

www.dawateislami.net

رحمة الرحمن عن حلية المحلى شرح منية المصلى كما فى الفتاوٰى رضويه (متن المنية)و ان انتقل الامام الى آية اخرىٰ ففتح عليه بعد الانتقال تفسد (شرح المنية)لوجود التلقين من غير ضرورة كذا فى الهدايه و غيرها و جعل صاحب الذخيرة هذا محكياعن القاضى الامام ابى بكر الزرنجرى و انّ غيره من المشائخ قالوا لاتفسد كذا نقلوا عن المحيط وأخذ من هذا صاحب النهاية أنّ عدم الفسادقول عامة المشائخ و وافقه شيخنا رحمه الله تعالى على ذلك وهو الاوفق لاطلاق الرخص الذى رويناه ملخصًا

(फ़तावा र-ज़विय्या, स. 263, जि. 7, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

وفى الهندية " أما اذا قرأ أوتحول ففتح عليه تفسد صلوة الفاتح والصحيح أنها لا تفسد صلوة الفاتح لكل حال ولا صلوة الامام لو أخذ منه على الصحيح هكذا فى الكافى

(فتاوى هندية ص۹۹ جلد اول مكتبه حقانيه پشاور)

सुवाल : ज़ैद तरावीह़ पढ़ा रहा था कि दो रक्अ़त पर तशह्हुद में बैठा, पिछली सफ़ों में से नमाज़ियों ने लुक़्मा दिया उन के गुमान में एक रक्अ़त हुई थी इमाम ने उन का लुक़्मा नहीं लिया बल्कि तशह्हुद पढ़ कर सलाम फैरा लुक़्मा देने वालों की नमाज़ हुई या नहीं ?

الجواب بعون الملك الوهاب

सूरते मज़्कूरा में जो लुक़्मा दिया गया वोह बे महल दिया गया और बे ह़ाजत लुक़्मा देने का ह़ुक्म येह है कि ऐसा लुक़्मा देने वाले की नमाज़ फ़ासिद हो जाती है लिहाज़ा जिन्हों ने लुक़्मा दिया उन की नमाज़

www.dawateislami.net

फ़ासिद हो गई ।

واللہ اعلم ورسولہ بالصواب عزوجل وصلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم

सुवाल : ज़ैद ने ईद की इमामत के लिये तक्बीरे तह़रीमा कह कर हाथ बांधे और सना पढ़ने के बा'द क़िराअत से पहले तक्बीर कहने के बजाए क़िराअत शुरूअ़ कर दी यहां तक कि सू-रतुल फ़ातिह़ा ख़त्म हो गई और दूसरी सूरत की पहली ही आयत शुरूअ़ की थी कि ज़ैद को लुक़्मा दिया गया और ज़ैद ने लुक़्मा ले कर तीनों तक्बीरें कहीं और अल ह़म्द से फिर से क़िराअत शुरूअ़ कर के नमाज़ ख़त्म की, नमाज़ के बा'द कुछ लोगों ने कहा कि नमाज़ नहीं हुई मगर ज़ैद ने कहा कि नमाज़ हो गई किस का मौक़िफ़ दुरुस्त है ?

الجواب بعون الملک الوھاب

लुक़्मा देने और लेने वाले बल्कि सारी जमाअ़त ही की नमाज़ न हुई कि क़वानीने शरीअ़त की रू से हुक्म येह है कि अगर पहली रक्अ़त में इमाम तक्बीराते ज़वाइद भूल जाए तो सूरए फ़ातिह़ा ख़त्म होने तक याद आ जाए तो उसी वक़्त तक्बीराते ज़वाइद कह ले और सूरए फ़ातिह़ा का इआ़दा करे लेकिन अगर सूरए फ़ातिह़ा पढ़ने के बा'द कोई सूरत शुरूअ़ कर दे तो दरमियान में तक्बीर न कहे बल्कि क़िराअत मुकम्मल करने के बा'द कहे जैसा कि अ़ल्लामा शामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं

ان بدأ الامام بالقراءة سهواً فتذکر بعد الفاتحة و السورة یمضی فی صلاته وان لم یقرأ الا الفاتحة کبر و أعاد القراءة لزومًا۔ (ردالمحتار ص۵۵ ج۳ مکتبہ امدادیہ)

इसी त़रह़ फ़तावा आ़लमगीरी में है

اذا نسی الامام تکبیرات العید حتی قرأ فانه یکبر بعد القراءة أو فی الرکوع مالم یرفع رأسه کذا فی التاتارخانیه"

(فتاوی عالمگیری ۱۷۶ ج اول قدیمی کتب خانہ)

www.dawateislami.net

तरजमा : जब इमाम तक्बीराते ईद भूल जाए यहां तक कि वोह क़िराअत शुरूअ़ कर दे तो वोह क़िराअत के बा'द तक्बीर कहेगा या रुकूअ़ में कहेगा जब तक कि सर न उठा ले इसी त़रह़ तातार ख़ानिया में है।

लिहाज़ा इमाम पर लाज़िम था कि जब वोह सूरत शुरूअ़ कर चुका तो मुक़्तदी का लुक़्मा न लेता और क़िराअत मुकम्मल करने के बा'द तक्बीराते ज़वाइद कहता। मगर उस ने लुक़्मा लिया तो हुक्मे शर-अ़ के ख़िलाफ़ बे जा लुक़्मा लिया और बे जा लुक़्मा देने और लेने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है पस सूरते मज़्कूरा में नमाज़ फ़ासिद हो गई। सूरते मज़्कूरा में फ़सादे नमाज़ ही का हुक्म फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल में भी बयान किया गया है। (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, स. 486, जि. 3, शब्बीर बिरादर लाहोर)

सुवाल : इमाम से कोई ग़-लती हुई म-सलन इमाम को बैठना था मगर वोह खड़ा हो गया और किसी जाहिल मुक़्तदी ने इमाम को आगाह करने की निय्यत से कहा कि "बैठ जाओ" क्या मुक़्तदी की नमाज़ पर कोई असर पड़ेगा ?

الجواب بعون الملك الوهاب

मुक़्तदी की नमाज़ टूट गई कि नमाज़ में कलाम ख़्वाह किसी भी ग़रज़ से हो मुफ़्सिदे नमाज़ है जैसा कि फ़तावा आ़लमगीरी में है

اذا تكلم فی صلاته ناسیاًأو عامداخاطئاً أو قاصداقلیلا أوكثیرا تكلم لاصلاح صلاته بأن قام الامام فی موضع القعود فقال له مقتدی "اقعد "أو قعد فی موضع القیام فقال له "قم"۔

(فتاوی ھندیہ ۱۰۹ ج اول قدیمی کتب خانہ)

www.dawateislami.net

तरजमा : नमाज़ में गुफ़्त-गू करना नमाज़ को फ़ासिद कर देता है ख़्वाह भूल कर गुफ़्त-गू की हो या जान बूझ कर, ख़ता के तौर पर की हो या क़स्दन, कम की हो या ज़ियादा, ख़्वाह उस की गुफ़्त-गू नमाज़ की इस्लाह़ ही के लिये क्यूं न हो म-सलन इमाम को बैठना था मगर खड़ा हो गया, मुक़्तदी ने कहा ''बैठ जा'' या खड़ा होने का मक़ाम था बैठ गया, मुक़्तदी ने कहा ''खड़ा हो जा'' तब भी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी ।

सुवाल : तरावीह़ या पन्जगाना नमाज़ में ब क़दरे किफ़ायत तिलावत कर चुका था इस के बा'द क़िराअत में उसे भूल हुई मुक़्तदी ने लुक़्मा दिया इमाम ने ले लिया क्या लुक़्मा लेने की वजह से इमाम को सज्दए सह्व भी करना पड़ेगा ?

الجواب بعون الملك الوهاب

जी नहीं, इमाम पर इस सूरत में सज्दए सह्व नहीं । सज्दए सह्व उस वक़्त होता है कि जब कोई नमाज़ का वाजिब भूले से रह जाए । फ़तावा आ़लमगीरी में है

لا يجب السجود الا بترك واجب أو تاخيره الى أن قالوا و فى الحقيقة وجوبه بشئ واحد وهو ترك الواجب كذا فى الكافى

(فتاوی ھندیہ ص ۶۵ ج اول مکتبہ حقانیہ پشاور)

तरजमा : सज्दए सह्व वाजिब को छोड़ने या उस में ताख़ीर करने से ही वाजिब होता है आगे मज़ीद है कि ह़क़ीक़त येह है कि सज्दए सह्व का वुजूब सिर्फ़ एक ही सूरत में होता है वोह है वाजिब का तर्क करना ।

www.dawateislami.net

सुवाल : इमाम से क़िराअत में भूल हुई मुक़्तदी ने लुक़्मा दिया मगर इमाम ने न लिया तो क्या ऐसी सूरत में लुक़्मा देने वाले की नमाज़ हो जाएगी या नहीं ?

الجواب بعون الملك الوهاب

अगर तो इमाम ने ग़-लती ऐसी की थी कि लुक़्मा लिये बिग़ैर मा'ना दुरुस्त न होते हों तो किसी की नमाज़ न हुई न इमाम की और न ही मुक़्तदी की लेकिन अगर ग़-लती ऐसी थी जिस से मा'ना फ़ासिद न हुए हों तो जिस का लुक़्मा इमाम ने न लिया उस की नमाज़ पर कोई असर न पड़ा। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, स. 189, जि. अव्वल)

والله تعالى أعلم بالصواب ورسوله صلى الله عليه و آله وسلم

तालिबे दुआ
सगे अत्तार **अल अहक़र अली असग़र** अल अत्तारिय्युल म-दनी
15 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1426 सि.हि.
शब चार बजे ब मुताबिक़ 20 सितम्बर 2005 सि.ई.

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब व रसाइल

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

उर्दू कुतुब :

1..... अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (ह़िस्सए अव्वल)
(कुल सफ़ह़ात : 250)

2..... करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ)
(कुल सफ़ह़ात : 199)

3..... दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَا لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

4..... वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (اَلْحُقُوْقُ لِطَرْحِ الْعُقُوْقِ) (कुल सफ़ह़ात : 125)

5..... आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِيِّ) (कुल सफ़ह़ात : 100)

6..... ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

7..... सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَالٍ) (कुल सफ़ह़ात : 63)

8..... विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَةُ) (कुल सफ़ह़ात : 60)

9..... शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

10..... ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِ فِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

11..... ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَحَبُّ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12..... मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तश्रीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़)
(कुल सफ़ह़ात : 41)

13..... राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَدُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ)
(कुल सफ़ह़ात : 40)

14..... औलाद के ह़ुक़ूक़ (مشعلة الارشاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

1..... जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (الزواجرعن اقتراف الكبائر) (कुल सफ़ह़ात : 853)

2..... जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِيْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ) (कुल सफ़ह़ात : 743)

3..... उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 412)

4..... आंसूओं का दरिया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़ह़ात : 300)

www.dawateislami.net

5..... हुस्ने अख़्लाक़ (مَکَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 74)
6..... बेटे को नसीहत (اَیُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64)
7..... सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा..? (تَمْهِیْدُ الْفَرْش فِی الْحِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)
8..... आदाबे दीन (الْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़हात : 62)

(शो'बए तख़्रीज)

1..... बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सए अव्वल ता शशुम, कुल सफ़हात : 1360)
2..... जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
3..... अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 422)
4..... बहारे शरीअ़त (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात : 312)
5..... सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 274)
6..... इ़ल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 244)
7..... जहन्नम के ख़तरात (कुल सफ़हात : 207)
8..... इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
9..... तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
10..... अर बईने ह़-नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
11..... आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
12..... अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़हात : 78)
13..... किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
14..... उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
15..... अच्छे माह़ोल की ब-र-कतें (कुल सफ़हात : 56)
16..... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
17 ता 23..... फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
24..... बहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
25..... सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 875)
26..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 7 (कुल सफ़हात : 133)
27..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 8 (कुल सफ़हात : 206)
28..... करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346)
29..... सवानेह़े करबला (कुल सफ़हात : 192)
30..... बहारे शरीअ़त हिस्सा 9 (कुल सफ़हात : 218)

www.dawateislami.net

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

1..... ज़ियाए स-दक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408)
2..... फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)
3..... रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
4..... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)
5..... निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)
6..... तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
7..... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)
8..... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)
9..... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)
10..... तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
11..... फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)
12..... ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)
13..... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)
14..... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)
15..... अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
16..... काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)
17..... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
18..... बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)
19..... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)
20..... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)
21..... तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)
22..... टीवी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
23..... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
24..... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)
25..... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150)
26..... रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net